

ISSN - 0973-1628

2002-2018

Running in 17<sup>th</sup> Year and  
11000 Papers Published

150 वीं गाँधी जयंती  
175 वाँ अंक-विशेष

Since 2002  
**175**

Issue - 175, Vol-XVII (8), October - 2018  
[www.researchlink.co](http://www.researchlink.co)

|                  |
|------------------|
| 2015             |
| Impact<br>Factor |
| 2.782            |

*Link*

₹250/-

Only for  
Members Strictly

Was Approved by UGC... but at present removed

A National, Registered, Peer Reviewed & Refereed Monthly Journal

**RESEARCH**

Kala, Samaj Vigyan awam Vanijya

हिंसक गुंडागिरी से न तो हिंदू धर्म की रक्षा होगी, न सिख धर्म की। गुरु ग्रंथ साहब में ऐसी शिक्षा नहीं दी गई है। ईसाई धर्म भी ये बातें नहीं सिखाता। इस्लाम की रक्षा तलवार से नहीं हुई है। आपको अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी होगी। वह रक्षा आप तभी कर सकते हैं, जब आप दयावान और वीर बनें और सदा जागरूक रहेंगे, अन्यथा एक दिन ऐसा आएगा जब आपको इस मूर्खता का पछतावा होगा, जिसके कारण यह सुंदर और बहुमूल्य फल आपके हाथ से निकल जाएगा। मैं आशा करता हूँ कि वैसा दिन कभी नहीं आएगा। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि लोकमत की शक्ति तलवारों से अधिक होती है।

Circulation More than 20  
States of India

Andaman-Nicobar / Bihar / Chattisgarh / Delhi / Goa / Gujarat / Haryana / Himachal / Jammu & Kashmir / Karnataka /  
Madhya Pradesh / Maharashtra / Punjab / Rajasthan / Sikkim / Uttar Pradesh / Uttranchal / West Bengal



संस्कृत विज्ञान अकादमी  
संस्कृत विज्ञान अकादमी



**Previously UGC Approved  
Journal - "Research Link" -  
S.No. 48985**

**A National, Registered, Peer Reviewed and Refereed  
Monthly Journal - Impact Factor 2.782 (2015)**

## Contents - 175

■ Research Link-175 ■ Vol - XVII (8) ■ October - 2018

### EXCLUSIVE : SAMPRATI

- **भारतीय विचारक : महात्मा गाँधी** - खुशी अंदर का विषय है, जो बांटने से सौगुनी मिलती है...  
**महात्मा गाँधी**.....6
- खुशी की जड़ें - गाँधी के सत्य, अहिंसा और शांति की ज़मीन में फैली हैं  
**सुरेश उपाध्याय**.....8
- **गैर-भारतीय विचारक : दलाई लामा** - मैं अपने दुश्मनों को मित्र बना लेता हूँ और वो मुझे खुशी बांटने और खुश रहने में मदद करते हैं...  
**दलाई लामा**.....10
- **खुशी के सम्बंध में विचारकों ने कहा है**.....11
- **7 WAYS TO GET INNER AND REAL HAPPINESS**.....12
- खुशियाँ बांटता हूँ और खुश रहता हूँ...  
**श्याम वाधवानी**.....13
- **स्मृति शेष : विष्णु खरे की तीन खरी बहुचर्चित कविताएँ**.....15

### SOCIAL SCIENCE

#### COMMERCE

- Contribution of Alternative Energy in Current Era  
**SWATI JHAWAR & DR. ASHOK SHARMA (160)**.....19
- Farmers Suicide  
**ANU BALA (150)**.....22

#### ECONOMICS

- The Economic of Sustainability : A Review of Journal Articles  
**BASAVARAJ KOMBIN (145)**.....25
- NREGA Will Fade Away, if Wages Continue to Stagnate - Economist  
**PRAKASH PATIL (146)**.....28
- काले धन की समस्या एवं सरकार द्वारा किये गये प्रयास : एक अध्ययन  
**डॉ.सुनीता वाथरे एवं आकांक्षा रजक ( 154 )**.....31

#### EDUCATION

- Achievement of Achievement Motivation Through Psychosocial Environment  
**DR.USHA RAO (121)**.....33
- A Study of Adjustment and Social Maturity in Girls of Working and Non-Working Mothers  
**DR. MEENAKSHI SARIN (162)**.....35
- कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनकी गणितीय अभियोग्यता पर प्रभाव का अध्ययन  
**श्रीमती शैलजा पवार एवं डॉ. ( श्रीमती ) शोभा पुरकर ( 144 )**...38
- अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत युवा शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का अध्ययन  
**डॉ.एन.के.कौशिक एवं श्रीमती लेखा चौरे ( 149 )**.....42

### GEOGRAPHY

- A Geographical Study of Rainfall Variability during Monsoon Season : A Case Study of Dimbhe Station in Pune District  
**DR. VILAS VASANT PATIL (169)**.....44
- Effect of Climate Change on Sugarcane Production : A Case study of Jalna District (Maharashtra)  
**DR. V.L. RAJALE (153)**.....47
- कृषि गहनता एवं कृषि क्षमता : जिला धमतरी (छत्तीसगढ़) का भौगोलिक अध्ययन  
**सुरेश कुमार साहू एवं डॉ.टी.एल.वर्मा ( 135 )**.....49
- गन्ना उत्पादन एवं गन्ना आधारित उद्योगों का विकास (नरसिंहपुर जिले के विशेष संदर्भ में)  
**मिताली पॉल ( 164 )**.....53
- जलवायु परिवर्तन का जल संसाधन पर प्रभाव - मिर्जापुर जनपद के विशेष संदर्भ में : एक अध्ययन  
**सन्तलाल ( 157 )**.....56

### POLITICAL SCIENCE

- Role of Andaman and Nicobar Islands as a Local Soft Actor in the Indian Ocean Region (IOR)  
**DR. R.V.R. MURTHY (155)**.....58
- भारत में न्यायिक सक्रियतावाद का विकास : राजनीतिक दृष्टि से एक अध्ययन  
**डॉ.अर्चना शर्मा ( 158 )**.....61

### PUBLIC ADMINISTRATION

- लातूर जिल्हा महसूल प्रशासनातील नाविन्यपूर्ण उपक्रम महाराजस्व अभियान  
**प्रा.डी.बी. जाधव ( 142 )**.....64

### ARTS & HUMANITIES

#### DANCE

- विष्णुधर्मोत्तर उपपुराण में नृत्य-तत्व  
**श्रीमती यास्मिन सिंह ( 133 )**.....67

#### ENGLISH LITERATURE

- George Bernard Shaw and His Iconoclastic Vision  
**SHAFQUAT JAHAN & PROF. D. K. SINGH (137)**.....70
- Use of Electronic Media as an Emerging Trend  
**DR. NIDHI MISHRA (147)**.....73
- Globalization in The Novels of Amitav Ghosh  
**DR. ARCHANA VERMA (159)**.....75
- Shakespeare in The Realm of Wit and Humour  
**JUGAL PRASAD & DR. D. K. SINGH (152)**.....78
- Sri Aurobindo's Discovery of 'Overmind Aesthesis' : A Transcendent 'Rasa' in Savitri  
**CHANDAN KUMAR & DR. NIKHIL KUMAR (156)**.....80

#### HINDI LITERATURE

- हिन्दी नाटक : सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य  
**डॉ.धीरेन्द्र शुक्ल ( 151 )**.....83
- आधुनिकतावाद के परिप्रेक्ष्य में विज्ञापन और हिन्दी  
**डॉ.अशोक कुमार ( 136 )**.....85
- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के प्रतिमान तथा विवेकानंद दर्शन  
**सनीश चन्द्र ( 131 )**.....87
- सिनेमा के क्षेत्र में साहित्य का योगदान  
**डॉ.समीर गुलाब सय्यद ( 148 )**.....91

**HISTORY**

- ब्रिटिशकालीन बस्तर में जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा विकास : एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन (1865-1947)  
डॉ.चेतन राम पटेल एवं पुष्पा खिलाड़ी ( 140 ).....93

**SANSKRIT LITERATURE**

- कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन  
सुन्दरलाल अहिरवार एवं डॉ.एस.एस.गौतम ( 132 ).....95

**MULTIDISCIPLINARY (Misc)****RESEARCH PAPER**

- Swami Vivekananda's Views on Women  
B.S. SHYLAJA (143).....98
- Provisions and Importance of Human Rights in Indian Constitution  
MUKESH KUMAR (134).....100
- अतिथि विद्वानों की समस्याएँ तथा शासन की उदासीनता (मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों के संदर्भ में)  
डॉ.दीपक कुमार मानकर ( 163 ).....103

- 'रिसर्च लिंक' सदस्यता फॉर्म.....106

**शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम**

- ( 1 ) शोध-पत्र 1500-1700 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- ( 2 ) हिन्दी एवं मराठी माध्यम के शोधपत्रों को कृतिदेव 10 (Kruti Dev 010) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजें।
- ( 3 ) अंग्रेजी माध्यम के शोधपत्र टाइम्स न्यू रोमन (Times New Roman), एरियल फॉन्ट (Arial) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' या 'माइक्रोसॉफ्ट वर्ड' में भेजे जा सकते हैं।
- ( 4 ) गुजराती माध्यम के शोधपत्र हरेकृष्णा ( Harekrishna ), टेराफॉन्ट वरुण ( Terafont Varun ), टेराफॉन्ट आकाश ( Terafont Aaksah ) में टाईप करवाकर 'पेजमेकर 6.5' में भेजे जा सकते हैं।
- ( 5 ) शोधपत्र की साफ्टकॉपी रिसर्च लिंक के ई-मेल आईडी researchlink@yahoo.co.in पर भेजने के बाद हार्डकॉपी, शोधपत्र के मौलिक होने के घोषणा पत्र के साथ हस्ताक्षर कर 'रिसर्च लिंक' के कार्यालय को प्रेषित करें।
- ( 6 ) 'रिसर्च लिंक' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है- बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ब्रांच : ओल्ड पलासिया, इन्दौर, कोड - **SBIN00003432** खाते का नाम : रिसर्च लिंक, खाता नंबर - **63025612815** भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालयीन पते पर भेजना अनिवार्य है।

**कार्यालय का पता :**

संपादक, रिसर्च लिंक

81 सर्वसुविधा नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड,  
बंगाली चौराहे के पास, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पीछे,  
इन्दौर (मध्यप्रदेश) - 452016  
मोबाइल नंबर 094253-49611

**'रिसर्च लिंक' क्या और क्यों : उद्देश्य**

'रिसर्च लिंक', सच और सकारात्मक सोच रखने वाले निष्पक्ष, निष्ठावान, समर्पित शिक्षकों, शोधार्थियों, सार्थियों और शुभचिंतकों के द्वारा उनका ही, उनके लिए एक जर्नल है। जर्नल कहें या एक खुला मंच, जो लेखन को प्रोत्साहित करता हो। भाषा, इतिहास, संस्कृति को बचाने की रक्षा में जुटा हो। इसमें शोधपत्रों के प्रकाशन के लिए तो घोषित रूप से जगह ही जगह है, किन्तु रिसर्च एक सशक्त विचार मंच और विचारों के आदान-प्रदान का व्यापक माध्यम बनें, इसके लिए हम संकल्पित हैं। हम ही क्यों, आपकी भी यही इच्छा होगी कि रिसर्च जैसे किसी मंच के माध्यम के अभाव में अपने को अकेला अनुभव कर रहे होंगे। इसलिए, निवेदन है कि इस जर्नल से जुड़ें। समान विचारधारा वाले सार्थियों, छात्रों को इससे जोड़ें। वैचारिक, रचनात्मक और आर्थिक सहयोग प्रदान करें। सुझाव दें कि इस वैचारिक यात्रा को स्थायी, स्तरीय और सशक्त अनिवार्य माध्यम बनाने के लिए और क्या कुछ किया जाना चाहिए।

प्रायः अकादमिक पत्रिकाओं को स्तरीय दिखाने-बनाने, चमकाने के लिए नामी-गिरामी स्थापित नामों की ही पुनरावृत्ति की जाती है, लेकिन इस बारे में हम बहुत स्पष्ट हैं। हमारी इच्छा है कि 'रिसर्च लिंक' तीनों पीढ़ियों का समान रूप से प्रतिनिधित्व करने में कामयाब हो। वरिष्ठ पीढ़ी जुड़े, लिखें और बतायें कि शोधपत्र कैसे लिखे जाएं। अध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक और शोधार्थी इससे जुड़ें। शोध करने वालों के समक्ष मॉडल के रूप में रखें। अपने विषयों से सम्बंधित नये शोध, नई किताबें, समकालीन चिंतन और घटनाक्रमों पर भी टिप्पणियाँ लिखें, जिन्हें 'सम्प्रति' के एक्सक्लूजिव कॉलम में प्रकाशित किया जाएगा। यही हमारा उद्देश्य है। शोधार्थी और प्राध्यापकों के लिखे हुए का हम आदर करते हैं और प्रतिवर्ष 'रिसर्च लिंक' की परंपरा के अनुसार रिसर्च सम्मान दिए जाते हैं। इस बार भी सम्मान के लिए नामांकन आमंत्रित हैं।

**शोध-पत्र प्रकाशन सम्बंधी सूचना**

'रिसर्च लिंक' (राष्ट्रीय मासिक शोध जर्नल) में शोधपत्रों के प्रकाशन हेतु किसी भी प्रकार का प्रकाशन शुल्क नहीं लिया जाता है। शोधपत्र प्रकाशन हेतु आप शोधपत्र की साफ्टकॉपी हमारे ई-मेल आईडी - researchlink@yahoo.co.in पर भेज सकते हैं। शोधपत्र प्राप्त होते ही रेफरी प्रकाशन हेतु स्वीकृत, अस्वीकृत अथवा संशोधन हेतु परामर्श प्रदान करता है। शोधपत्र प्रकाशन योग्य होने पर ही केवल शोधछात्रों, प्राध्यापकों से सदस्यता शुल्क लिया जाता है। सदस्यता शुल्क का भुगतान ऑन-लाईन हमारे खाते में सीधे किया जा सकता है। बैंक सम्बंधी जानकारी निम्नानुसार है -

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया  
ब्रांच : ओल्ड पलासिया, इन्दौर,  
कोड - **SBIN 000 3432**  
खाते का नाम : रिसर्च लिंक,  
खाता नंबर - **63025612815**

भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालयीन पते पर भेजना अनिवार्य है।



Since  
March 2002

A National, Registered,  
Peer Reviewed &  
Refereed Monthly Journal

**Dance**

Research Link - 175, Vol - XVII (8), October - 2018, Page No. 67-69

ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

## विष्णुधर्मोत्तर उपपुराण में नृत्य-तत्व

प्रस्तुत शोधपत्र में विष्णुधर्मोत्तर उपपुराण में नृत्य-तत्व का अध्ययन किया गया है। नृत्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम शास्त्रीय आधार नाट्यशास्त्र को स्वीकार किया जाता है। विष्णुधर्मोत्तर उपपुराण में वर्णित नृत्य-तत्वों के अध्ययन से प्रतीत होता है कि नृत्य तत्वों की व्याख्या के दौरान उपपुराणकर्ता ने भरत द्वारा निर्दिष्ट लक्षणों को आधार मानते हुए प्रयोग विधान का विवेचन किया गया है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण के तृतीय खण्ड 'चित्रसूत्रम्' के सत्रहवें अध्याय से चौंतीसवें अध्याय तक नृत्य विषयक अनेक तत्व दिए गए हैं, जो शास्त्रीय नृत्य-प्रयोग हेतु उपयोगी हैं। यद्यपि ग्रंथ में उक्त अध्यायों के प्राथमिक रूप से किए गए अध्ययन से प्रतीत होता है कि इसमें दिए नृत्य-तत्व नाट्यशास्त्र से प्रभावित हैं तथापि पुराणकालीन नृत्य परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में यह ग्रंथ तत्कालीन नृत्य परम्परा के साथ-साथ पूर्ववर्ती परम्परा का भी अनुसरण करता प्रतीत होता है। **कुँजी शब्द** : पुराण, सनातन सभ्यता और संस्कृति, धर्म, कला, संस्कृत साहित्य, विष्णुपुराण में नृत्य-तत्व, विष्णु धर्मोत्तरपुराण में नृत्य-तत्व।

### श्रीमती यास्मिन सिंह

**भा**रत का प्राचीन इतिहास, संस्कृति और धर्म का विशद वर्णन पुराणों से प्राप्त होता है। इसके साथ-साथ कला के क्षेत्र में भी पुराणों की महति भूमिका निर्विवाद रही है। पुराणों की रचना मूलतः चारों वेदों के आधार पर की गई है, ऐसा विद्वानों का मत है। भारतीय जीवन साहित्य के शृंगार 'पुराण' अतीत को वर्तमान से जोड़ने वाली स्वर्णिम श्रृंखला है। विश्व वाङ्मय की अक्षय निधि में अद्वारह पुराण सर्वश्रेष्ठ अद्वारह रत्न हैं। ये अपनी सरल सुबोध भाषा और प्रबुद्ध कथानक शैली के कारण अति प्राचीन होते हुए भी नवीनता और स्फूर्ति उत्पन्न करते हैं।

पुराणों के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि पुराण वस्तुतः वैदिक कथाओं, जनश्रुतियों एवं सृष्टि, विसृष्टि, प्रलय, मन्वन्तर, आचारवर्णन, राजवंश वर्णन के प्रतीक हैं। पौराणिक सूतों के कथनानुसार पुराण तत्त्वज्ञ भगवान वेदव्यास ने आख्यान, उपाख्यान, गाथा, कल्पशुद्धि के साथ पुराण संहिताओं की रचना की। पुराणों की इस स्वीकृति से सिद्ध होता है, कि वेदों की भाँति इतस्ततः बिखरे हुए पुराणों को भी संग्रह करके व्यास जी ने अपनी मान्यता के अनुसार उनका संपादन किया। वेद की भाँति आदिकाल में 'पुराणमेकमेवासीत्' अर्थात् पुराण एक ही था। कालान्तर में पुराणों का विभाजन सुतों द्वारा हुआ।<sup>(1)</sup>

उपपुराण जो ग्रंथ पंचलक्षणात्मक महापुराणों से विषयों के विन्यास तथा देवी-देवताओं के वर्णन में न्यून हैं, परंतु उनसे बहुशः साम्य रखते हैं, वे उपपुराण नाम से अभिहित किए जाते हैं। विद्वानों ने आदित्य (या सौर), उशनस् (या औशनसव), कपिल, कालिका, देवीपुराण, विष्णुधर्मोत्तर आदि अद्वारह उपपुराण निश्चित किए हैं। अन्य मतों से इनकी संख्या और भी अधिक है। इनके यथार्थ संख्या तथा नाम के विषय में बहुत मतभेद है। विभिन्न उपपुराणों में धर्म,

समाज आदि विभिन्न विषयों का वर्णन तो प्राप्त होता ही है, इसके कलाओं के क्षेत्र में भी वेद और पुराणों की ही भाँति उपपुराणों की नितान्त अनिवार्य भूमिका स्वमेव सिद्ध रही है। इस दृष्टि से विष्णुधर्मोत्तर का नाम विषेय रूप से उल्लेखनीय रहा है। इस उपपुराण में पुराण के सामान्य विषयों के अतिरिक्त नृत्य, संगीत, स्थापत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, मूर्तिविधान तथा मंदिर निर्माण का भी विवरण मिलता है, जो कला की दृष्टि से नितान्त रोचक, उपयोगी तथा उपादेय है।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण मूलतः विष्णुपुराण का ही द्वितीय भाग है। अतः इसे "उपपुराण" की श्रेणी में अवस्थित किया गया है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अन्तिम अध्याय की कारिका एवं इसके उपरांत दी गई पुष्पिका में आचार्य ने इस तथ्य का उल्लेख किया है—

**"इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयभागे श्रीविष्णुधर्मोत्तरे तृतीयखण्डे मार्कण्डेयवज्रसंवादे श्रीनरसिंहस्तोत्रवर्णनं नाम पञ्चाशदुत्तरत्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ इति श्रीविष्णुधर्मोत्तरं॥ ॥ समाप्तं वेदं विष्णुमहापुराणम्॥"**<sup>(2)</sup>

विष्णुधर्मोत्तरपुराण में राजा वज्र द्वारा जिज्ञासावश पूछे गए प्रश्नों का उत्तर एवं विषयानुसार आवश्यक निर्देशों का प्रतिपादन ऋषि मार्कण्डेय द्वारा किया गया है। इस दृष्टि से यह एक संवादात्मक ग्रंथ है।<sup>(3)</sup> इसे उपपुराण माना गया है। इस पुराण में अन्य बातों के अतिरिक्त कला और शिल्प का भी विशद वर्णन है। इसमें मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्यकला, वास्तुकला आदि पर ऐतिहासिक महत्त्व के बड़े ज्ञानवर्द्धक अध्याय हैं। विद्वानों का अनुमान है, कि यह पुराण पाँचवी शती में लिखा गया था। अनुमान किया जाता है, कि अजन्ता की गुफाओं में की गई चित्रकारी में इस उपपुराण से प्रायः सम्बद्ध रही हैं।<sup>(4)</sup>

शोधार्थी (कथक नृत्य विभाग), राजा मानसिंह तोमर कला संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

विष्णुधर्मोत्तर उपपुराण में नृत्य संबंधी विभिन्न तत्त्वों का उल्लेख प्राप्त होता है, जो इससे पूर्व विष्णु पुराण में अपेक्षाकृत संक्षिप्त रूप में निर्दिष्ट किए गए हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि विष्णुपुराण में नृत्य प्रयोग संबंधी तथ्यों का वर्णन किया गया है, तो विष्णुधर्मोत्तर में उसी नृत्य कला के सैद्धान्तिक पक्ष को उजागर किया गया है। इस दृष्टि से विष्णुधर्मोत्तर से पूर्व विष्णुपुराण में वर्णित नृत्य संबंधी तत्त्वों पर दृष्टिपात प्रासंगिक है।

अद्वारह पुराणों में श्रीविष्णुपुराण का विशेष महत्व है। इसे वैष्णव सम्प्रदाय का पुराण भी कहा जाता है। विष्णुपुराण में भगवान विष्णु एवं उनके भिन्न-भिन्न अवतारों के सन्दर्भ में यत्र-तत्र नृत्य का उल्लेख किया गया है। इस पुराण के द्वितीय अंश के दसवें अध्याय में मुनिगणों द्वारा सूर्य की स्तुति, गन्धर्वों द्वारा श्री विष्णु का यशोगान एवं अप्सराओं द्वारा नृत्य किये जाने का उल्लेख किया गया है :

**“स्तुवन्ति मुनयः सूर्यं गन्धर्वैर्गीयते पुरः।**

**नृत्यन्त्यप्सरसो यान्ति सूर्यस्थानु निशाचराः॥२०॥”<sup>(६)</sup>**

विष्णुपुराण के चतुर्थ अंश में भी श्री रामचन्द्र के सिंहासनारूढ़ होने का उल्लेख किया गया है, जिसमें लक्ष्मण, भरतादि के साथ-साथ सम्पूर्ण देवगणों, ऋषिगणों सहित चारों वेद-ऋषियों द्वारा नृत्य, गीत एवं विभिन्न वाद्यों सहित अभिषिक्त होने की बात कही गई है—

**“लक्ष्मणाभारत . . . . . नृत्य गीतवाद्या—  
द्यखिललोकमंगलवाद्यैर्वीणावेणुमृदंगभेरीपटह— शंखकाहलगो.  
..... एकादशाब्दसहस्रं राज्यमकरोत्॥१९॥”<sup>(६)</sup>**

विष्णुपुराण के पंचम अंश में कालिया दमन और रासलीला का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसका वर्तमान शास्त्रीय नृत्यों (विशेषकर कथक नृत्य) में महत्वपूर्ण स्थान है। कथक नृत्य में कथानक के अंतर्गत “कालिया दमन” पर नृत्य करने की परम्परा रही है। इस पुराण में कालिया दमन के दौरान श्रीकृष्ण द्वारा नृत्य किए जाने का उल्लेख सुस्पष्ट रूप से किया गया है, जिसके अनुसार— श्रीकृष्ण ने स्वयं को सर्प के बन्धन से छुड़ाकर अपने दोनों हाथों से उसके बीच के फण के ऊपर नृत्य करने लगे। उस समय श्रीकृष्ण रेचक तथा दण्डपात नामक नृत्यसम्बन्धी गतियों के कारण सर्प मूर्छित—सा हो गया और उसका रक्त बहने लगा।

**“आनम्य चापि हस्ताभ्यामुभाभ्यां मध्यमं शिरः।**

**आरुह्याभुगशिरसः प्रणनत्तोरुविक्रमः॥४४॥**

**मूर्च्छामुपाययौ भ्रान्त्या नागः षण्णस्य रेचकैः।**

**दण्डपातनिपातेन ववाम रुधिरं बहु॥४६॥”<sup>(७)</sup>**

कृष्ण गोपियों के साथ रासक्रीडा प्रारंभ होती है, जिसमें शरद वर्णन सम्बन्धी गीतों के साथ-साथ कृष्णचन्द्र चन्द्रमा, चन्द्रिका और कुमुदवन द्वारा संबंधित गीतों का गान करने का उल्लेख किया गया है। तदनुसार गोपी द्वारा नृत्य करने की बात स्पष्ट रूप से कही गई है—

**“कृष्णाशरच्चन्द्रमसं कौमुदीं कुमुदाकरम्।**

**जगौ गोपीजनस्त्वेकं कृष्णनाम पुनः पुनः॥५२॥**

**परिवृत्तिश्रमेणैका चलद्वलयलापिनीम्।**

**ददौ बाहुलतां स्कन्धे गोपी मधुनिघातिनः॥५३॥”<sup>(८)</sup>**

उल्लेखनीय है, कि वर्तमान कथक नृत्य में कालिया दमन पर अनेकानेक प्रयोग एवं नृत्यनाटिकायें प्रदर्शित की जा चुकी हैं। साथ

ही, रासनृत्य, जो नटवरी नृत्य के रूप में भी प्रसिद्ध रहा है, का प्रयोग कथक नृत्य प्रस्तुतिकरण में विशेष रूप से लक्षित होता है। पूर्व में कथक नृत्य को नटवरी नृत्य भी कहा गया है, जिसका सीधा संबंध कृष्ण द्वारा गोपियों के साथ किए जाने वाले पुराणों में उल्लिखित ‘रासक्रीडा’ अथवा ‘रासनृत्य’ से ही है।

इस प्रकार विष्णुपुराण में नृत्य प्रयोग संबंधी प्रकरणों से यह बात पुष्ट होती है, कि तत्कालीन समाज में नृत्य प्रचलित था, जिसका आधार धर्म रहा होगा। इस काल में नृत्य संभवतः देवताओं द्वारा अथवा देवताओं हेतु किया जाता था। विष्णुपुराण के सादृश्य ‘विष्णुधर्मोत्तरपुराण’ में भी नृत्य से संबंधित अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण तीन खण्डों में विभक्त है तथा कला की दृष्टि से इसका तीसरा खण्ड “चित्रसूत्रम्” विशेष महत्व रखता है। इस खण्ड के प्रारंभ में राजा वज्र द्वारा कलाओं के अंतर्संबंध में पूछे गए प्रश्न का समाधान करते हुए आचार्य ने स्पष्ट रूप से कहा है, कि नृत्य शास्त्र के ज्ञान के बिना चित्रसूत्र को समझना कठिन है—

**विना तु नृत्य शास्त्रेण चित्रसूत्रं सुदुर्विदम्।**

**नृत्यशास्त्रं समाचक्ष्व चित्रसूत्रं वदिश्यसि।**

**नृत्यशास्त्र विधानं च चित्रं वेत्ति यतोद्विज।<sup>(९)</sup>**

तत्पश्चात् आचार्य ने नृत्य विधा के ज्ञान हेतु आतोद्य (अर्थात् वादक कला) का ज्ञान, आतोद्य के ज्ञान हेतु गीत-शास्त्र का ज्ञान एवं गीत-शास्त्र हेतु संस्कृत भाषा, व्याकरण एवं छंद आदि को समझना अनिवार्य बताया है—

**“आतोद्येन यो न जानाति तस्य वृतं हि दुर्विदम्।**

**आतोद्येन विना नृतं विद्यते न कथंचन॥५॥**

**न गीतेन विना शक्यं ज्ञातुमातोद्यमप्युत।**

**गीतशास्त्रविधानज्ञः सर्व वेत्ति यथाविधि॥७॥**

**गीतशास्त्र समाचक्ष्व सर्वधर्म भूतां वर।**

**गीतशास्त्र विदेवाथ सर्वज्ञः पुरुषोत्तमः॥८॥**

**संस्कृतं प्राकृतं चैव गीतं द्विविधमुच्यते।**

**अपभ्रष्टं तृतीयं चतदनन्तं नराधिप॥९॥”<sup>(१०)</sup>**

विष्णुधर्मोत्तर पुराण के तृतीय खण्ड/१७वें अध्याय में आचार्य द्वारा नायिका भेद का निरूपण किया गया है। इसके अतिरिक्त नौ प्रकार के रसों को बताते हुए आचार्य ने इन्हें नाट्य-विधाओं में प्रयोग की बात कही है, जो निम्नलिखित है—

**“अतः परं प्रवक्ष्यामि नायिकाष्टकलक्षणम्।**

**निजापराधात्स्वगृहे वाससज्जा तु नायिका॥५६॥**

**विरहोत्कण्ठिता सैव या त्वनागतनायिका।**

**स्वाधीन भर्तृका प्रोक्ता या स्यात्स्वाधीन भर्तृका॥५७॥**

**कलहान्तरिता प्रोक्ताकलाहतनायिका।**

**खण्डिता याच नखरैर्युतमेति प्रगोपतिम्॥५८॥**

**विप्रलब्धा तु सा ज्ञेया संकेते कान्तवर्जिता।**

**प्रवासगतकान्ता तु तथा प्रोषितभर्तृका॥५९॥**

**एतासामुचिताकार लीला भिर्बन्धनं घनम्।**

**नाटकादिषु रूपेषु कर्तव्यं द्वादशशवपि॥६०॥**

**भृंगाररहास्यकरुणवीररौद्रभयानकाः।**

**बीभत्साद्भुतशान्ताख्या नव नाट्यरसाः स्मृताः॥६१॥**

**बन्धो रसानुगः कार्यः सवैष्वेतेषु यत्नतः”**

रसप्रधानमेवैतत्सर्वनाथं नराधिपः॥६२॥

एते कलाकौशलशीलयुक्ताः कार्यास्तथा लोक विधानयुक्ताः।

धर्मर्थकामाद्युपदेशगाश्च हिताय लोकस्य नरेन्द्रचन्द्र॥६३॥<sup>(११)</sup>

उक्त कारिकाओं में आठ प्रकार की नायिकाओं का वर्णन है—वासकसज्जा, विरहोत्कण्ठिता, स्वाधीनपतिता, कलहान्तरिता, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितभर्तृका। शास्त्रीय नृत्यकलाओं में नायिका—भेद एक अनिवार्य विषय के रूप में देखा गया है। विभिन्न शास्त्रीय नृत्य में नायिकाओं को विशेष स्थान प्राप्त है। कथक नृत्य में भी सभी आठ नायिकाओं का कथानुरूप प्रयोग देखा जा सकता है। 'नायिका भेद के कथक शास्त्र की प्रतिभा और सृजनशीलता को नवीन अनुभूतियों व नित नये सृजन से क्रियाशील बनाये रखा है। नायिका भेद के द्वारा कलाकार कथक की काव्य रचनाओं से ही नहीं, वरन् संस्कृत व हिन्दी साहित्य की काव्य रचनाओं से जुड़कर कथक को साहित्यिक, बौद्धिक प्रतिभा से समृद्ध कर सकता है, साथ ही कथक के भाव पक्ष को नवीन कल्पनाओं व सृजनशीलता से उर्वर बना सकता है। नायिका भेद कलाकार की मनोवैज्ञानिक क्षमता का विकास करता है। इसी के आधार पर कथक जिस 'रूप' का विधान करता है, वह बाह्य के साथ आन्तरिक सौन्दर्य के लिए भी होता है। रूप जीवन की आन्तरिक आकांक्षा है, जो आनन्ददायिनी और जीवन्तता का प्रतीक है।<sup>(१२)</sup>

ऋषि मारकण्डेय नायिका लक्षणों से पूर्व १७वें अध्याय में ही नाटक एवं नायक—प्रतिनायक (सहनायक) के लक्षणों का निरूपण किया है। ग्रंथ के इस अध्याय में रूपकभेद नामक बारह प्रकार के नाटकों का लक्षणसहित वर्णन प्राप्त होता है।<sup>(१३)</sup> इसी खण्ड के २०वें अध्याय में चारी एवं महाचारी के भेदोपभेदों का वर्णन किया गया है। इसके साथ-साथ गतिमण्डल एवं इसके भेद, छत्तीस प्रकार के अंगहारों—**"षट्त्रिंशदेते संप्रोक्ता ह्यंगहारा यदूत्तम"**<sup>(१४)</sup> का निरूपण करते हुए आचार्य ने १०८ करणों—**"अष्टोत्तरशतं चैव करणानां प्रकीर्तितम्"**<sup>(१५)</sup> के नाम भी इसी अध्याय में बताये गये हैं। तत्पश्चात् वृत्ति—प्रवृत्ति के भेदोपभेदों का वर्णन किया गया है।<sup>(१६)</sup> उक्त वर्णन के बाद आचार्य द्वारा अभिनयानुसार बैठक व्यवस्था का वर्णन किया गया है तथा इसके पश्चात् हस्त मुद्राओं के अंतर्गत संयुक्त एवं असंयुक्त हस्त मुद्रायें बताई गई हैं। ग्रंथ में तेरह संयुक्त हस्त मुद्रायें तथा बाईस असंयुक्त हस्त मुद्राओं के नाम बताये गये हैं। इसके अतिरिक्त नृत्य हस्तों के विषय में भी चर्चा की गई है।<sup>(१७)</sup>

जैसा कि ज्ञात है, कि नृत्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम शास्त्रीय आधार नाट्यशास्त्र को स्वीकार किया जाता है। विष्णुधर्मोत्तर उपपुराण में वर्णित नृत्य—तत्त्वों के अध्ययन से प्रतीत होता है, कि यह भरत के नाट्यशास्त्र से पूर्णतः प्रभावित रहा है। नृत्य—तत्त्वों की व्याख्या के दौरान उपपुराणकर्त्ता में भरत द्वारा निर्दिष्ट लक्षणों को आधार मानते हुए इनका विवेचन एवं प्रयोग विधान का विवेचन किया है।

इस प्रकार विष्णुधर्मोत्तरपुराण के तृतीय खण्ड "चित्रसूत्रम्" के सत्रहवें अध्याय से चौतीसवें अध्याय तक नृत्य विषयक अनेकानेक तत्व दिये गये हैं, जो शास्त्रीय नृत्य—प्रयोग हेतु उपयोगी हैं। यद्यपि ग्रंथ में उक्त अध्यायों के प्राथमिक रूप किए गए अध्ययन से प्रतीत होता है, कि इसमें दिये नृत्य—तत्व नाट्यशास्त्र से प्रभावित है, तथापि

पुराणकालीन नृत्य परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में यह ग्रंथ तत्कालीन नृत्य परम्परा के साथ-साथ पूर्ववर्ती परम्परा का भी अनुसरण करता प्रतीत होता है।

#### सन्दर्भ :

- (१) शास्त्री, रामप्रताप त्रिपाठी, "महामुनिश्रीमद्व्यास प्रणीतवायुपुराणम्", हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९८७, आमुख, पृ. १.
- (२) दास, श्रीकृष्ण, क्षेमराज (संपादक) : "श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणम्", नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, १९८५, खण्ड-३, अध्याय ३५५, पृ.४७१.
- (३) द्विवेदी, डॉ. प्रेमशंकर एवं डॉ. बिन्दू दूबे : "चित्रसूत्रम् (विष्णुधर्मोत्तरपुराण में चित्रकला)", कला प्रकाशन, वाराणसी, १९९९, 'वक्तव्य' से उद्धृत।
- (४) मालवीय, बद्रीनाथ : "विष्णुधर्मोत्तरपुराण में चित्रकला", इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन्स) प्रा.लि., प्रयाग, १९६०, श्रीनारायण चतुर्वेदी द्वारा लिखी गई 'भूमिका' से उद्धृत, पृ.१-२.
- (५) श्रीविष्णुपुराणम्, द्वितीय अंश, अध्याय १०, पृ.१४०.
- (६) वही, चतुर्थ अंश, अध्याय १०, पृ. १४०.
- (७) वही, पंचम अंश, अध्याय ७, पृ. ३२८.
- (८) वही, अध्याय १३, पृ. ३४६.
- (९) दास, श्रीकृष्ण, क्षेमराज (संपादक) : "श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणम्", नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, १९८५, खण्ड-३, अध्याय २, श्लोक संख्या १-४, पृ. ३०७.
- (१०) वही, श्लोक संख्या ५-९, पृ. ३०७-३०८.
- (११) वही, अध्याय १७, श्लोक संख्या ५६-६३, पृ. ३१४.
- (१२) बख्शी, ज्योति : "कथक अक्षरों की आरसी", मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण २०००, पृ.१२७.
- (१३) दास, श्रीकृष्ण, क्षेमराज (संपादक) : "श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणम्", नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, १९८५, खण्ड-३, अध्याय १७, श्लोक संख्या ६-५५, पृ.३१४.
- (१४) वही, अध्याय १७, श्लोक संख्या ३२-३५, पृ. ३१६.
- (१५) वही, श्लोक संख्या ३७-५४, पृ. ३१६.
- (१६) वही, श्लोक संख्या ५४-६२, पृ. ३१६.
- (१७) वही, अध्याय २१-२६, पृ. ३१६-३२०.

